Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X Pg. 59-66

दक्षिण-पूर्व एशिया और वियतनाम में बौद्ध कूटनीति: सॉफ्ट पावर का एक अध्ययन

Sonu Kumar
Research Scholar, Department of Political Science, Km Mayawati Government Girls P.G. (Autonomous) College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar, U.P.

Prof. (Dr.) Divya Nath
Department of Political Science, Km Mayawati Government Girls P.G. (Autonomous) College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar, U.P.

Accepted: 19/08/2026
Published: 20/08/2026 ***DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.22012102***

Abstract

यह शोध पत्र दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेष रूप से वियतनाम, में बौद्ध कूटनीति को सॉफ्ट पावर के एक प्रभावी साधन के रूप में विश्लेषित करता है। जोसेफ एस. Nye की सॉफ्ट पावर की अवधारणा के आधार पर यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि बौद्ध धर्म समकालीन क्षेत्रीय कूटनीति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। अध्ययन का केंद्र भारत और चीन के बीच बौद्ध विरासत पर आधारित रणनीतिक प्रतिस्पर्धा है, जिसके माध्यम से दोनों राष्ट्र वियतनाम तथा अन्य आसियान देशों के साथ अपने सांस्कृतिक एवं कूटनीतिक संबंधों को सुदृढ़ करते हुए क्षेत्रीय प्रभाव का विस्तार कर रहे हैं। यह शोध गुणात्मक एवं विवरणात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा समकक्ष-समीक्षित शोध पत्रिकाओं, नीति-दस्तावेज़ों और विश्लेषणात्मक समाचार स्रोतों सहित विभिन्न द्वितीयक स्रोतों के आलोचनात्मक अध्ययन पर आधारित है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि वियतनाम में बौद्ध धर्म का ऐतिहासिक एवं राजनीतिक महत्त्व उसे क्षेत्रीय कूटनीति का एक स्वाभाविक केंद्र बनाता है। साथ ही, भारत की एक्ट ईस्ट नीति तथा चीन की क्षेत्रीय रणनीति के अंतर्गत बौद्ध प्रतीकों, पवित्र अवशेषों और सांस्कृतिक संस्थानों का सॉफ्ट पावर के प्रभावी साधनों के रूप में उपयोग किया जा रहा है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि वियतनामी राज्य ने बौद्ध संघ को राज्य-नियंत्रित संस्थागत ढाँचे में समाहित कर राष्ट्रीय एकता, सामाजिक स्थिरता तथा वैचारिक वैधता को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक कूटनीति और घरेलू राजनीति के बीच घनिष्ठ अंतर्संबंध विकसित हुए हैं। साथ ही, अध्ययन सॉफ्ट पावर की अवधारणा तथा बौद्ध कूटनीति की वास्तविक प्रभावशीलता से संबंधित आलोचनात्मक दृष्टिकोणों की भी समीक्षा करता है, जो इसकी मापनीयता एवं दीर्घकालिक कूटनीतिक सार्थकता पर प्रश्न खड़े करते हैं। इस प्रकार, आसियान क्षेत्र में बौद्ध कूटनीति सांस्कृतिक संपर्क, क्षेत्रीय सहयोग तथा रणनीतिक संतुलन की प्रक्रियाओं को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करती है।

कुंजी शब्द (Keywords): *सॉफ्ट पावर, बौद्ध कूटनीति, वियतनाम, एक्ट ईस्ट नीति*

1. प्रस्तावना

शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति की अवधारणा के स्वरूप में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया। सैन्य एवं आर्थिक शक्ति पर आधारित 'हार्ड पावर' के समानांतर जोसेफ एस. Nye ने 'सॉफ्ट पावर' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसके अनुसार किसी राष्ट्र की प्रभावशीलता केवल बल प्रयोग पर निर्भर नहीं करती, बल्कि आकर्षण, वैधता तथा सहमति के माध्यम से अन्य देशों के व्यवहार को प्रभावित करने की उसकी क्षमता पर भी आधारित होती है (Nye, 1990)। इस संदर्भ में संस्कृति, राजनीतिक मूल्य तथा विदेश नीति की विश्वसनीयता सॉफ्ट पावर के प्रमुख स्रोत माने जाते हैं।

एशिया में धर्म, विशेषतः बौद्ध धर्म, सॉफ्ट पावर आधारित कूटनीति के एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरा है। विश्व की अधिकांश बौद्ध जनसंख्या एशिया में निवास करती है तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के कंबोडिया, थाईलैंड, लाओस, म्यांमार और वियतनाम जैसे देशों की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पहचान पर इसका गहरा प्रभाव रहा है (ORCA Asia, 2023)। परिणामस्वरूप, यह क्षेत्र भारत और चीन दोनों के लिए सांस्कृतिक एवं रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन गया है।

इस परिप्रेक्ष्य में वियतनाम का विशेष महत्त्व है। यहाँ बौद्ध धर्म को ऐतिहासिक रूप से सुदीर्घ राजकीय संरक्षण प्राप्त रहा है, जिसका विस्तृत ऐतिहासिक विवरण आगे धारा 5.1 में प्रस्तुत किया गया है (Dang et al., 2024)। वर्तमान में वियतनाम धार्मिक संस्थाओं को राज्य-नियंत्रित ढाँचे के अंतर्गत संचालित करता है, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक कूटनीति और घरेलू राजनीति के बीच घनिष्ठ संबंध विकसित हुए हैं। इसी संदर्भ में भारत और चीन बौद्ध सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से वियतनाम के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ करते हुए क्षेत्रीय प्रभाव का विस्तार कर रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वियतनाम के संदर्भ में बौद्ध कूटनीति, उसके सॉफ्ट पावर आयामों तथा भारत-चीन की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का विश्लेषण करना है।

2. साहित्य समीक्षा

सॉफ्ट पावर की सैद्धांतिक आधारशिला Nye (1990, 2004) के कार्यों में निहित है, जिन्होंने इसे आकर्षण के माध्यम से अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया। Gallarotti (2011) ने इस अवधारणा का विस्तार करते हुए स्पष्ट किया कि सांस्कृतिक एवं धार्मिक संसाधन किसी राष्ट्र की कूटनीतिक विश्वसनीयता तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बौद्ध कूटनीति से संबंधित उपलब्ध साहित्य दर्शाता है कि भारत और चीन बौद्ध विरासत का उपयोग भिन्न रणनीतिक दृष्टिकोणों के माध्यम से कर रहे हैं। Raj et al. (2026) के अनुसार, भारत की नीति सभ्यतागत विरासत एवं सांस्कृतिक निकटता पर आधारित है, जबकि चीन का दृष्टिकोण अधिक राज्य-केंद्रित एवं भू-राजनीतिक है। Chia (2025) के अनुसार, समकालीन कूटनीति में मंदिर, तीर्थस्थल तथा धार्मिक-सांस्कृतिक परिसर भी महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक मंच बन चुके हैं। इसका उदाहरण वियतनाम एवं थाईलैंड में भारत द्वारा बुद्ध के पवित्र अवशेषों की प्रदर्शनी के रूप में देखा जा सकता है।

वियतनाम-केंद्रित अध्ययनों में Soucy (2022) तथा Bui (2022) यह स्पष्ट करते हैं कि वियतनाम में बौद्ध धर्म राज्य-नियंत्रित संस्थागत ढाँचे के अंतर्गत संचालित होता है। वहीं, *The Journal of Asian Studies* में प्रकाशित अध्ययन दर्शाता है कि वियतनाम में बौद्ध धर्म और राष्ट्रीय पहचान के बीच संबंध ऐतिहासिक रूप से अत्यंत गहरा रहा है।

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति पर *India Review* में प्रकाशित *Temple Diplomacy* अध्ययन तथा एक्ट ईस्ट नीति से संबंधित शोध यह दर्शाते हैं कि सांस्कृतिक विरासत, मंदिर संरक्षण तथा धार्मिक संपर्कों के माध्यम से आसियान देशों के साथ सहयोग को सुदृढ़ किया गया है। समग्रतः उपलब्ध साहित्य यह स्थापित करता है कि बौद्ध कूटनीति एक उभरता हुआ शोध क्षेत्र है, किंतु वियतनाम जैसे देशों में धर्म, राज्य-सत्ता और सॉफ्ट पावर के बीच अंतर्संबंधों पर अभी भी अधिक गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

तथापि, उपलब्ध साहित्य में सॉफ्ट पावर की अवधारणा तथा बौद्ध कूटनीति की प्रभावशीलता पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी विद्यमान हैं। Yukaruç (2017) के अनुसार सॉफ्ट पावर की अवधारणा मौलिकता, मापनीयता तथा अभिकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण जैसी सीमाओं से ग्रस्त है, जिसके कारण यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करना कठिन हो जाता है कि किसी राष्ट्र का व्यवहार वास्तव में सांस्कृतिक अथवा धार्मिक आकर्षण से प्रभावित हुआ है अथवा नहीं। इसी प्रकार Carminati (2023) का तर्क है कि सॉफ्ट पावर संबंधी अधिकांश अध्ययन केवल Nye के मूल कार्य पर ही निर्भर रहते हैं, जिससे यह क्षेत्र एक चक्रीय संदर्भ (referential cycle) में सीमित रह जाता है तथा इसकी सैद्धांतिक प्रगति बाधित होती है। भारत की बौद्ध कूटनीति के संदर्भ में Kumar (2023) यह इंगित करते हैं कि दक्षिण एशिया में भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति के परिणाम मिश्रित रहे हैं तथा बौद्ध अवशेष-प्रदर्शनियों जैसी पहलों में भी बौद्ध धर्म के मूल मूल्यों—समानता, अहिंसा तथा संवाद—के प्रचार पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है, जिससे इन आयोजनों का

दीर्घकालिक कूटनीतिक प्रभाव प्रश्नांकित होता है। वियतनाम के संदर्भ में अमेरिकी विदेश विभाग की अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता रिपोर्ट (U.S. Department of State, 2022) यह रेखांकित करती है कि राज्य-मान्यता-प्राप्त बौद्ध संघ के बाहर कार्यरत संगठनों, विशेषतः यूनिफाइड बुद्धिस्ट चर्च ऑफ वियतनाम, को उत्पीड़न तथा प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, जो वियतनामी राज्य द्वारा धार्मिक कूटनीति के उपयोग की वैधता पर प्रश्न खड़ा करता है। इस प्रकार साहित्य केवल बौद्ध कूटनीति की सफलता का ही समर्थन नहीं करता, बल्कि इसकी सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक सीमाओं की ओर भी संकेत करता है।

3. शोध उद्देश्य एवं शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेष रूप से वियतनाम, के संदर्भ में बौद्ध कूटनीति के सॉफ्ट पावर आयामों, उसके रणनीतिक महत्त्व तथा भू-राजनीतिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित शोध उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

1. दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेषतः वियतनाम, में बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक महत्त्व का विश्लेषण करना।

2. भारत एवं चीन की बौद्ध सॉफ्ट पावर कूटनीति की तुलनात्मक समीक्षा करना।

3. वियतनाम की राज्य-नियंत्रित धार्मिक संरचना तथा उसके प्रभावों का अध्ययन करना।

4. दक्षिण-पूर्व एशिया में क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन पर बौद्ध कूटनीति के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन निम्नलिखित शोध प्रश्नों के उत्तर खोजता है:

(क) वियतनाम में बौद्ध धर्म की राजनीतिक एवं कूटनीतिक प्रासंगिकता क्या है?

(ख) भारत एवं चीन की बौद्ध कूटनीति की रणनीतियों में क्या प्रमुख अंतर हैं?

(ग) वियतनामी राज्य की धार्मिक नीति सॉफ्ट पावर कूटनीति को किस प्रकार प्रभावित करती है?

4. शोध पद्धति (Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं विवरणात्मक-विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन अंतरराष्ट्रीय संबंधों, धार्मिक अध्ययन तथा क्षेत्रीय राजनीति के अंतर्विषयक स्वरूप को ध्यान में रखते हुए द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसके लिए समकक्ष-समीक्षित शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं पुस्तक-अध्यायों, नीति-अनुसंधान संस्थानों की रिपोर्टों तथा प्रतिष्ठित समाचार स्रोतों से सामग्री संकलित की गई। संकलित साहित्य का विश्लेषण विषयवस्तु-विश्लेषण तथा तुलनात्मक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से किया गया, जिसमें सॉफ्ट पावर, वियतनाम के ऐतिहासिक-राजनीतिक संदर्भ तथा भारत-चीन की बौद्ध कूटनीतिक रणनीतियों का मूल्यांकन किया गया। अध्ययन की प्रमुख सीमा यह है कि यह द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा इसमें प्राथमिक सर्वेक्षण अथवा साक्षात्कार सम्मिलित नहीं हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त द्वितीयक स्रोतों का श्रेणीगत वितरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: अध्ययन में प्रयुक्त द्वितीयक स्रोतों का श्रेणीगत वितरण (कुल स्रोत = 20)

स्रोत श्रेणी	संख्या	प्रतिशत	उदाहरण
समकक्ष-समीक्षित शोध पत्रिकाएँ (Peer-reviewed journals)	8	40%	Bunthorn (2023); Dang et al. (2024); Gallarotti (2011); Kumar (2023); Mahaseth et al. (2023); Nguyen (2018); Raj et al. (2026); Yukaruç (2017)
पुस्तकें / पुस्तक-अध्याय (Books / Book chapters)	3	15%	Nye (2004); Soucy (2022); Buddhism and Comparative Constitutional Law
समाचार/पत्रिका विश्लेषण (News & magazine analysis)	3	15%	Asia Times; The Vietnamese Magazine; Bangkok Post
नीति-अनुसंधान/थिंक-टैंक लेख (Policy/think-tank articles)	4	20%	ORCA Asia; US Dept. of State; India vs Disinformation; Zhang (2012)
सेमिनल सैद्धांतिक लेख (Seminal theoretical article)	1	5%	Nye, Foreign Policy (1990)

स्रोत श्रेणी	संख्या	प्रतिशत	उदाहरण
समालोचनात्मक लेख/ब्लॉग (Critical commentary)	1	5%	USC Center on Public Diplomacy

तालिका 1 से स्पष्ट है कि अध्ययन मुख्यतः समकक्ष-समीक्षित शोध पत्रिकाओं (40%) पर आधारित है, जबकि पुस्तकों, समाचार विश्लेषणों, नीति-अनुसंधान स्रोतों तथा मौलिक सैद्धांतिक लेखों का समावेशन अध्ययन को वैचारिक एवं विश्लेषणात्मक संतुलन प्रदान करता है। यह बहु-स्रोत दृष्टिकोण निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं वैधता को सुदृढ़ करता है। कुल 20 द्वितीयक स्रोतों में समालोचनात्मक/आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने वाले शोध-लेख भी सम्मिलित किए गए हैं, ताकि अध्ययन केवल समर्थक साहित्य तक सीमित न रहकर संतुलित एवं बहु-दृष्टिकोणीय बना रहे।

5. परिणाम एवं विश्लेषण (Findings)

अध्ययन के निष्कर्षों का विश्लेषण वियतनाम में बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक विकास, राज्य-नियंत्रित धार्मिक संरचना, भारत एवं चीन की बौद्ध कूटनीति तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में सॉफ्ट पावर के व्यापक आयामों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

5.1 वियतनाम में बौद्ध धर्म: ऐतिहासिक एवं राजनीतिक संदर्भ

वियतनाम में बौद्ध धर्म दो सहस्राब्दियों से अधिक समय से धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण आधार रहा है। ली एवं त्रान राजवंशों के काल में इसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था तथा इसने राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई (Dang et al., 2024)। बीसवीं शताब्दी में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बौद्ध संस्थाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई तथा 1951 में *General Buddhist Association of Vietnam* की स्थापना ने धार्मिक नेतृत्व को एक संस्थागत स्वरूप प्रदान किया। वर्ष 1963 का *Buddhist Crisis* यह दर्शाता है कि वियतनाम में बौद्ध धर्म धार्मिक पहचान के साथ-साथ राजनीतिक वैधता और राष्ट्रीय एकीकरण से भी गहराई से जुड़ा रहा।

5.2 समकालीन वियतनाम: राज्य-नियंत्रित बौद्ध संघ

1975 के पुनः एकीकरण के बाद वियतनाम ने धार्मिक संस्थाओं को राज्य-नियंत्रित ढाँचे के अंतर्गत संगठित किया। वर्ष 1981 में *Vietnam Buddhist Sangha* को आधिकारिक बौद्ध संगठन का दर्जा दिया गया, जबकि *Unified Buddhist Church of Vietnam* पर प्रतिबंध लगा दिया गया। समकालीन नीति के अंतर्गत बौद्ध धर्म को सामाजिक स्थिरता, राष्ट्रीय एकता तथा वैचारिक वैधता के साधन के रूप में विकसित किया गया। परिणामस्वरूप, धार्मिक कूटनीति वियतनाम की विदेश नीति और सॉफ्ट पावर रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गई।

5.3 भारत की बौद्ध कूटनीति और वियतनाम

भारत ने एक्ट ईस्ट नीति के अंतर्गत बौद्ध विरासत को दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ सांस्कृतिक एवं रणनीतिक जुड़ाव के आधार के रूप में विकसित किया है। वर्ष 2025 में वियतनाम में आयोजित बुद्ध अवशेष प्रदर्शनी में लगभग 1.5 करोड़ श्रद्धालुओं की सहभागिता धार्मिक कूटनीति की प्रभावशीलता को दर्शाती है (Chia, 2025)। *Temple Diplomacy* से संबंधित अध्ययनों के अनुसार, भारत मंदिर संरक्षण, सांस्कृतिक संपर्क तथा सभ्यतागत विरासत के माध्यम से दीर्घकालिक विश्वास एवं क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ कर रहा है (Raj et al., 2026)।

तालिका 2: भारत की बौद्ध अवशेष-कूटनीति के प्रमुख हालिया कार्यक्रम

वर्ष	मेज़बान देश	अवसर / कार्यक्रम	रिपोर्ट की गई भागीदारी
2024	थाईलैंड	मकहा बूचा दिवस एवं थाई नरेश का जन्मदिवस	व्यस्त दिनों में लगभग 1,00,000 दैनिक आगंतुक
2025	वियतनाम	बहु-नगरीय बुद्ध अवशेष प्रदर्शनी (मई-जून)	लगभग 1.5 करोड़ (15 मिलियन) श्रद्धालु

स्रोत: 2024 थाईलैंड आँकड़ा — Bangkok Post, 2024; 2025 वियतनाम आँकड़ा — Chia, 2025; इंडिया वर्सेज़ डिसइन्फॉर्मेशन, 2024

तालिका 2 से स्पष्ट है कि भारत की बौद्ध सांस्कृतिक पहलें दक्षिण-पूर्व एशिया में व्यापक जनस्वीकार्यता प्राप्त कर रही हैं तथा उसके सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करने में योगदान दे रही हैं।

5.4 चीन की बौद्ध कूटनीति और भारत-चीन प्रतिस्पर्धा

चीन ने भी बौद्ध धर्म को अपनी विदेश नीति के एक रणनीतिक उपकरण के रूप में विकसित किया है। Raj et al. (2026) तथा Zhang (2012) के अनुसार, उसकी बौद्ध कूटनीति राज्य-केंद्रित एवं भू-राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित है। दक्षिण चीन सागर विवाद सहित क्षेत्रीय परिस्थितियों के कारण वियतनाम ने भारत के साथ सांस्कृतिक सहयोग को

भी प्रोत्साहित किया है, जिससे वह भारत और चीन के मध्य रणनीतिक संतुलन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तालिका 3: भारत एवं चीन की बौद्ध कूटनीति रणनीतियों की तुलनात्मक विशेषताएँ

आयाम	भारत का दृष्टिकोण	चीन का दृष्टिकोण
वैधता का आधार	बुद्ध के जन्म एवं ज्ञान-प्राप्ति स्थल के रूप में सभ्यतागत उद्गम-दावा	तिब्बत पर नियंत्रण के आधार पर संरक्षक की भूमिका का दावा
संस्थागत ढाँचा	अपेक्षाकृत विकेंद्रीकृत; ICCR, MEA एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ	अधिक केंद्रीकृत, राज्य-नियोजित कूटनीतिक तंत्र
प्रमुख उपकरण	अवशेष-यात्राएँ, मंदिर जीर्णोद्धार, शैक्षणिक आदान-प्रदान	बौद्ध सम्मेलन, बुनियादी ढाँचा निवेश, सांस्कृतिक कथा-निर्माण
नीतिगत ढाँचा	एक्ट ईस्ट नीति (2014–); संस्कृति, संपर्क एवं वाणिज्य	क्षेत्रीय भू-रणनीतिक विस्तार से जुड़ी दीर्घकालिक योजना
मुख्य प्रेरणा	सभ्यतागत एवं सांस्कृतिक निकटता	भू-राजनीतिक एवं रणनीतिक लक्ष्य

स्रोत: Raj et al., 2026; Zhang, 2012 के आधार पर संकलित

तालिका 3 से स्पष्ट है कि भारत की रणनीति सभ्यतागत विरासत और सांस्कृतिक संपर्क पर आधारित है, जबकि चीन का दृष्टिकोण अधिक राज्य-केंद्रित एवं भू-राजनीतिक है।

5.5 आसियान क्षेत्र में सॉफ्ट पावर के व्यापक आयाम

बौद्ध कूटनीति का प्रभाव केवल वियतनाम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण आसियान क्षेत्र में सांस्कृतिक सहयोग और कूटनीतिक सहभागिता का एक महत्त्वपूर्ण आधार बन चुका है। Bunthorn (2023) के अनुसार, भारत सांस्कृतिक संरक्षण, बौद्ध शिक्षा और राजनयिक संपर्कों के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ कर रहा है, जबकि आसियान देश भारत और चीन के मध्य संतुलन बनाए रखते हुए अपने रणनीतिक हितों की रक्षा कर रहे हैं। यद्यपि प्रस्तुत अध्ययन का प्राथमिक केंद्र-बिंदु वियतनाम है, कंबोडिया, लाओस तथा म्यांमार जैसे अन्य आसियान देशों में भी बौद्ध बहुसंख्यक जनसंख्या तथा राजकीय संरक्षण-प्राप्त धार्मिक संस्थाएँ विद्यमान हैं (ORCA Asia, 2023), जिसके कारण ये देश भी भारत-चीन की बौद्ध सॉफ्ट पावर प्रतिस्पर्धा के संभावित क्षेत्र के रूप में उभर सकते हैं; तथापि प्रस्तुत अध्ययन में इनका विस्तृत विश्लेषण सम्मिलित नहीं है तथा इसे आगे भविष्य के अनुसंधान हेतु अनुशंसित किया गया है।

6. विवेचन (Discussion)

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि बौद्ध कूटनीति को केवल सांस्कृतिक अथवा धार्मिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सॉफ्ट पावर के एक बहुआयामी एवं रणनीतिक उपकरण के रूप में समझा जाना चाहिए। Nye (1990) द्वारा प्रतिपादित सॉफ्ट पावर की अवधारणा के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध कूटनीति आकर्षण, वैधता, सांस्कृतिक विश्वसनीयता तथा साझा सभ्यतागत विरासत जैसे उन सभी प्रमुख तत्त्वों को समाहित करती है, जिन्हें प्रभावी सॉफ्ट पावर के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। इस अध्ययन के निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि साझा धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत राज्यों के मध्य विश्वास-निर्माण, सांस्कृतिक संवाद तथा दीर्घकालिक कूटनीतिक सहयोग को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तथापि, Gallarotti (2011) द्वारा व्यक्त यह दृष्टिकोण समान रूप से प्रासंगिक प्रतीत होता है कि सॉफ्ट पावर की वास्तविक प्रभावशीलता केवल प्रतीकात्मक आयोजनों पर नहीं, बल्कि उसके समर्थन में विद्यमान दीर्घकालिक, सुसंगत एवं संस्थागत रणनीतिक निवेश पर निर्भर करती है। अन्यथा, सांस्कृतिक या धार्मिक पहलें सीमित अवधि के प्रतीकात्मक प्रभाव तक ही सीमित रह सकती हैं (India vs Disinformation, 2024)।

तथापि, इस निष्कर्ष को अधिक सतर्कता के साथ भी देखा जाना आवश्यक है। Yukaruç (2017) एवं Carminati (2023) द्वारा उठाई गई यह आलोचना उल्लेखनीय है कि सॉफ्ट पावर की अवधारणा मापन की दृष्टि से अस्पष्ट बनी हुई है तथा यह सिद्ध करना अत्यंत कठिन है कि कोई राज्य वास्तव में सांस्कृतिक आकर्षण के कारण अपेक्षित परिणाम प्राप्त करता है, अथवा यह प्रभाव अन्य आर्थिक अथवा राजनयिक कारकों का परिणाम है। तालिका 2 में उल्लिखित बुद्ध अवशेष-प्रदर्शनियों में भारी जन-सहभागिता (लगभग 1,00,000 दैनिक आगंतुक तथा 1.5 करोड़ श्रद्धालु) निश्चित रूप से धार्मिक-सांस्कृतिक आकर्षण को दर्शाती है, किंतु इससे यह स्वतः सिद्ध नहीं होता कि इसका कूटनीतिक

अथवा रणनीतिक दृष्टि से दीर्घकालिक प्रभाव भी उतना ही सुदृढ़ है। Kumar (2023) के अनुसार भारत की बौद्ध सॉफ्ट पावर रणनीति के परिणाम दक्षिण एशिया में भी मिश्रित रहे हैं, जो यह संकेत देता है कि प्रतीकात्मक आयोजनों की लोकप्रियता को कूटनीतिक सफलता के समतुल्य नहीं माना जा सकता। इसके अतिरिक्त, वियतनाम में राज्य-मान्यता-प्राप्त एवं प्रतिबंधित बौद्ध संगठनों के मध्य विद्यमान भेद (U.S. Department of State, 2022) यह भी दर्शाता है कि राज्य-नियंत्रित धार्मिक कूटनीति स्वतंत्र धार्मिक अभिव्यक्ति की कीमत पर संचालित हो सकती है, जो इस सॉफ्ट पावर रणनीति की नैतिक एवं व्यावहारिक वैधता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत एवं चीन द्वारा बौद्ध कूटनीति के प्रयोग में वैचारिक, संस्थागत तथा रणनीतिक स्तर पर उल्लेखनीय भिन्नताएँ विद्यमान हैं। भारत की रणनीति अपेक्षाकृत विकेंद्रीकृत, सभ्यतागत विरासत, सांस्कृतिक निकटता तथा दीर्घकालिक जन-आधारित संपर्क पर आधारित है, जबकि चीन का दृष्टिकोण अधिक केंद्रीकृत, राज्य-नियोजित तथा व्यापक भू-राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित प्रतीत होता है (Raj et al., 2026)। यह अंतर दोनों देशों की विदेश नीति की व्यापक वैचारिक संरचना का भी प्रतिबिंब है, जहाँ भारत बहुलतावादी सांस्कृतिक विरासत एवं लोकतांत्रिक सहभागिता को महत्त्व देता है, जबकि चीन राज्य-केंद्रित संस्थागत नियंत्रण के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक एवं कूटनीतिक उपस्थिति का विस्तार करता है। इस परिप्रेक्ष्य में वियतनाम की भूमिका विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाती है (Mahaseth et al., 2023)। एक समाजवादी, किंतु आर्थिक रूप से बाजारोन्मुखी राज्य होने के कारण वियतनाम भारत और चीन के मध्य विकसित हो रही इस सॉफ्ट पावर प्रतिस्पर्धा से एक ओर सांस्कृतिक एवं कूटनीतिक अवसर प्राप्त करता है, जबकि दूसरी ओर उसे अपनी धार्मिक संस्थाओं एवं सांस्कृतिक कूटनीति को राज्य-नियंत्रित ढाँचे के भीतर संतुलित बनाए रखने की चुनौती का भी सामना करना पड़ता है (Soucy, 2022)।

अध्ययन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि वियतनाम में राज्य-मान्यता-प्राप्त तथा गैर-मान्यता-प्राप्त बौद्ध संगठनों के मध्य विद्यमान संस्थागत विभाजन अंतरराष्ट्रीय धार्मिक कूटनीति की व्यावहारिक सीमाओं को भी उजागर करता है। जब अंतरराष्ट्रीय धार्मिक संपर्क, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा कूटनीतिक गतिविधियाँ मुख्यतः राज्य-मान्यता-प्राप्त संस्थाओं के माध्यम से संचालित होती हैं, तब यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उभरता है कि क्या ऐसी व्यवस्था वास्तव में जन-आधारित सॉफ्ट पावर का प्रतिनिधित्व करती है अथवा वह राज्य-नियंत्रित प्रतीकात्मक कूटनीति का ही एक संस्थागत रूप है (Nguyen, 2018)। यह द्वंद्व समकालीन धार्मिक कूटनीति की प्रकृति, उसकी प्रभावशीलता तथा उसकी वास्तविक वैधता के संबंध में महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न प्रस्तुत करता है (The Vietnamese Magazine, 2025)। इस दृष्टि से वियतनाम का अनुभव यह संकेत करता है कि धार्मिक कूटनीति की सफलता केवल साझा सांस्कृतिक विरासत पर निर्भर नहीं करती, बल्कि राज्य की संस्थागत संरचना, राजनीतिक प्राथमिकताओं तथा धार्मिक स्वतंत्रता के स्वरूप से भी गहराई से प्रभावित होती है। फलस्वरूप, यह अध्ययन भविष्य के अनुसंधानों के लिए धार्मिक कूटनीति, राज्य-सत्ता तथा सॉफ्ट पावर के मध्य अंतर्संबंधों के अधिक गहन एवं तुलनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता को रेखांकित करता है (Bui, 2022)।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बौद्ध कूटनीति समकालीन दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेष रूप से वियतनाम, में सॉफ्ट पावर का एक प्रभावशाली, बहुआयामी तथा रणनीतिक उपकरण बन चुकी है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वियतनाम में बौद्ध धर्म की गहन ऐतिहासिक विरासत, उसकी राजनीतिक प्रासंगिकता तथा राज्य-नियंत्रित संस्थागत संरचना ने उसे भारत एवं चीन, दोनों के लिए एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं कूटनीतिक साझेदार के रूप में स्थापित किया है। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ है कि भारत की एक्ट ईस्ट नीति के अंतर्गत विकसित सभ्यतागत एवं सांस्कृतिक जुड़ाव तथा चीन की अपेक्षाकृत राज्य-केंद्रित बौद्ध कूटनीति के बीच उभरती प्रतिस्पर्धा केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव तक सीमित नहीं है, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया में क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, रणनीतिक साझेदारियों तथा भू-राजनीतिक समीकरणों को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही है (Nye, 2004)।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी इंगित करते हैं कि बौद्ध कूटनीति साझा सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक स्मृति तथा धार्मिक संबंधों के माध्यम से राज्यों के बीच विश्वास-निर्माण, सांस्कृतिक संवाद तथा दीर्घकालिक कूटनीतिक सहयोग को सुदृढ़ करने की उल्लेखनीय क्षमता रखती है (Dang et al., 2024)। तथापि, इसकी प्रभावशीलता केवल सांस्कृतिक प्रतीकों अथवा धार्मिक आयोजनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संबंधित राज्यों की नीतिगत प्राथमिकताओं, संस्थागत संरचनाओं तथा दीर्घकालिक रणनीतिक प्रतिबद्धताओं से भी गहराई से संबद्ध होती है। इस दृष्टि से वियतनाम का अनुभव यह दर्शाता है कि धार्मिक कूटनीति समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सॉफ्ट पावर, राज्य-सत्ता तथा क्षेत्रीय राजनीति के

मध्य विकसित हो रहे जटिल अंतर्संबंधों को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करती है।

अध्ययन यह अनुशंसा करता है कि नीति-निर्माताओं तथा शोधकर्ताओं को बौद्ध कूटनीति को अंतरराष्ट्रीय संबंधों, सांस्कृतिक कूटनीति तथा सॉफ्ट पावर संबंधी अकादमिक एवं नीतिगत विमर्श का एक महत्त्वपूर्ण विषय मानते हुए इसके दीर्घकालिक भू-राजनीतिक निहितार्थों पर अधिक गंभीरता से विचार करना चाहिए। भविष्य के अनुसंधानों के लिए यह अपेक्षित है कि प्राथमिक क्षेत्रीय सर्वेक्षणों, बौद्ध भिक्षुओं एवं धार्मिक संस्थाओं के साक्षात्कारों तथा तुलनात्मक बहु-देशीय अध्ययनों को सम्मिलित करते हुए इस विषय का अनुभवजन्य एवं तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए (Bui, 2022; Mahaseth et al., 2023; Nguyen, 2018)। विशेष रूप से, वियतनाम के अतिरिक्त कंबोडिया, लाओस तथा म्यांमार जैसे अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संदर्भ में बौद्ध कूटनीति की प्रकृति, प्रभावशीलता तथा क्षेत्रीय रणनीतिक भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन इस उभरते हुए शोध क्षेत्र को और अधिक समृद्ध तथा व्यापक बना सकता है (Raj et al., 2026)।

संदर्भ सूची (References)

1. Bangkok Post. (2024, March 5). 'Over 1m' saw Buddha relics. Retrieved from https://www.bangkokpost.com/thailand/general/2752754/over-1m-saw-buddha-relics
2. Bui, N. S. (2022). Governing Buddhism in Vietnam. Buddhism and Comparative Constitutional Law, 272–284.
3. Bunthorn, K. (2023). Soft power in India's Act East policy: A Cambodian perspective. India Quarterly, 79(2), 189–208.
4. Carminati, D. (2023, March 15). The problem with soft power: A vicious referential cycle. USC Center on Public Diplomacy. Retrieved from https://uscpublicdiplomacy.org/blog/problem-soft-power-vicious-referential-cycle
5. Chia, J. M. (2025, August). Hard rivalry for Buddhism's soft power. Asia Times. Retrieved from https://asiatimes.com/2025/08/hard-rivalry-for-buddhisms-soft-power/
6. Dang, P. M. T., Nguyen, D. T., Bui, H. T., & Nguyen, T. T. (2024). The Role Of Buddhism In The Social Development Of Vietnam: Past, Present, And Future; O Papel Do Budismo No Desenvolvimento Social Do Vietnam: Passado, Presente E Futuro; El Papel Del Budismo En El Desarrollo Social De Vietnam: Pasado, Presente Y Futuro. Revista De Gestao Social E Ambiental.
7. Gallarotti, G. M. (2011). Soft power: what it is, why it's important, and the conditions for its effective use. Journal of Political Power, 4(1), 25–47.
8. India vs Disinformation. (2024). India's cultural diplomacy: Buddhism and ancient ties. Retrieved from https://www.indiavsdisinformation.com/en/20240311/india-s-cultural-diplomacy-buddhism-and-ancient-ties
9. Kumar, S. Y. S. (2023). The limits of India's soft power in South Asia. Journal of Contemporary Politics, 2(1), 15–25. https://doi.org/10.53989/jcp.v2i1_1_surendra
10. Mahaseth, H., Sarmah, U. K., & Qureshi, S. (2023). Temple diplomacy and India's soft power: A cultural approach to diplomacy in Southeast Asian States. India Review, 22(1), 28–42.
11. Nguyen, P. V. (2018). A Secular State for a Religious Nation: The Republic of Vietnam and Religious Nationalism, 1946–1963. The Journal of Asian Studies, 77(3), 741–771.
12. Nye, J. (1990). Soft power. Foreign Policy, 80, 153–171.
13. Nye, J. S. (2004). Soft power: The means to success in world politics. Public Affairs.
14. Organisation for Research on China and Asia (ORCA Asia). (2023). The role of Buddhist diplomacy in India's soft power. Retrieved from https://orcasia.org/article/179/the-role-of-buddhist-diplomacy-in-indias-soft-power
15. Raj, R. S., Singh, S. K., Jha, P. K., Radha, Srivastava, B. C., & Parth. (2026). Competing narratives of Buddhism: a comparative analysis of India and China's approaches to Buddhist diplomacy in South and South East Asia. Frontiers in Political Science, 8, 1899691. https://doi.org/10.3389/fpos.2026.1899691
16. Soucy, A. (2022). Zen conquests: Buddhist transformations in contemporary Vietnam. University of Hawaii Press.
17. The Vietnamese Magazine. (2025). Geopolitics and religion in Việt Nam. Retrieved from https://www.thevietnamese.org/2025/10/geopolitics-and-religion-in-viet-nam/

18. U.S. Department of State. (2022). 2022 report on international religious freedom: Vietnam. Retrieved from https://www.state.gov/reports/2022-report-on-international-religious-freedom/vietnam/

19. Yukaruç, U. (2017). A critical approach to soft power. Bitlis Eren Üniversitesi Sosyal Bilimler Enstitüsü Dergisi, 6(2), 491–502.

20. Zhang, J. (2012). Buddhist Diplomacy: History and status quo. CPD Perspective, 8, 5–62.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.